लिपि प्रकाशन
1, अंसारी रोड, नई दिल्ली-110 002

शब्द दंश

मुद्राराक्षस

मूल्य : रु० 24.00

© मुद्राराक्षस

प्रथम संस्करण : 1984

प्रकाशक
लिपि प्रकाशन
1, अंसारी रोड, दरियागंज
नई दिल्ली-110 002

मुद्रक : ग्रन्थशिल्पी द्वारा नागरी प्रिंटर्स, दिल्ली-32

SHABDA DANSH (Short Stories) By Mudrarakshas

शब्द-दंश

बाढ़

□

ऐसा दृश्य चंदू ने अपनी ज़िन्दगी में पहली बार देखा था, हालांकि उसकी जिन्दगी मुश्किल से 10 वर्ष की हुई होगी। ऐसा नहीं है कि बाढ़ से वह अपरिचित रहा हो, लेकिन उसकी उसने जो भी कल्पना कर रखी थी वह बिलकुल छिन्न-भिन्न हो गयी।

चूंकि मकान के आगे फूस की मोटी परत की ढालू छत काफी मोटे बांसों के चौखटों पर बनायी गयी थी और उसके एक ऊंचे वाले छोर को वहीं उग पड़े नीम के पेड़ से अटकाना पड़ा था, इसलिए वह काफी मजबूत लग रहा था और उसके मां-बाप के अलावा दो छोटी बहनों को भी आसानी से रोके हुए था। शुरू में फूस की उस ढालू छत पर टिकना कुछ मुश्किल काम लगा था, लेकिन जल्दी ही उसकी भी उन्हें आदत हो गयी थी। उस छत के पीछे कच्ची मिट्टी की दीवारों पर लंबीलंबी शहतीरें डाल कर छत बना ली गयी थी। वे दीवारें अब कहीं दिखाई नहीं दे रही थीं, लेकिन शहतीरों की वजह से, जिनसे फूस की छत के कुछ हिस्से बंधे थे, ये लोग अब भी मजे में पानी से ऊपर टिके हुए थे।

चूंकि चंदू फूस की छत की ऊंचाई पर था, जहां अच्छे वक्त में उसका बाप उसे कतई चढ़ने नहीं देता था, इसलिए वह बहुत दूर-दूर तक देख सकता था। ऊपर आसमान पर कहीं नीलापन नहीं था, बल्कि ऐसा जमा हुआ भूरा कालापन छाया हुआ था, जैसे बलगम जम गया हो। नीचे झाग, सड़े कूड़े और छोटी-मोटी हरी पत्तियों वाली शाखों को बेतरतीबी और दिशाहीनता से ढकेलता हुआ पीली मिट्टी घुला हुआ पानी था, जिससे लगातार सड़े चूहों जैसी गंध आती रहती थी। वह पानी जिस तरह

निगाहों की सीमा से बहुत आगे तक फैल कर काले दिखने वाले दरख्तों के काले बड़े-बड़े मस्से जैसे चिपकाये इधर-से-उधर दौड़ता था। उससे चंदू को डर कम लगता था, घुटन जरूर महसूस होती थी।

उसे गंदले पानी का खासा अभ्यास था। गांव के किनारे के कीचड़ भरे तालाबों में वह छोटी मछलियों से लेकर केकड़े तक पकड़ने के लिए लथपथ हुआ करता था और प्यास लगने पर ऊपर की सड़ी पत्तियां और काई हटा कर पानी पी भी लेता था। लेकिन यह पानी कुछ दूसरा था। इसमें उसे अपने प्रति थोड़ा अन्याय और एक किस्म की दुश्मनी घुली महसूस होती थी।

उसके आसपास के मकानों का क्या हुआ यह उसे जल्दी समझ में नहीं आया, लेकिन इतनी दूर जितनी दूर उसकी आवाज पहुंच सके, उसी तरह की फूस की छत के सहारे जो परिवार टिका दिखाई देता था,वह उसे काफी बुरा लग रहा था। दरअसल उस परिवार में चार बच्चे थे, जिनमें से सिर्फ एक ही दिखाई दे रहा था और चंदू के आवाज देने पर भी वह बोलता कुछ नहीं था, सिर्फ घूरता था और किलकिलाते हुए पानी की उबाने वाली आवाज के बीच उस दूर की छत से उस बच्चे की मां की जैसी लगातार रोने की आवाज सुनाई देती रहती थी उससे चंदू काफी परेशानी महसूस करता था।

वैसे तो वह आराम से उस ढालू फूस की छत पर सो सकता था, लेकिन सोने में अब उसे असुविधा होने लगी थी। पेट चूंकि बहुत ज्यादा ही खाली था, इसलिए सोने पर या तो पसलियों में दर्द होने लगता था या फिर बेचैनी से नींद खुल जाती थी। और इस सारे अरसे में उसे वही एक रोने की आवाज सुनाई देती रहती थी।

दरअसल चंदू उस बच्चे से पूछना चाहता था कि उसकी छत पर कुछ कंकड़-पत्थर हैं या नहीं। इस मटियाले, काले, सर्द और सीलन भरे माहौल की जड़ता को तोड़ने का उसके पास शुरू-शुरू में एक बेहतरीन तरीका था। फूस की अपनी छत पर खुद उसीने चिड़ियों या गिलहरियों के ऊपर जो पत्थर फेंके थे। वे मिल गये थे। उन्हें उसे उस बेहद घिनौने पानी में जोर के साथ फेंकने में खास मजा आता था। मिट्टी के बर्तनों में चिपटे

टुकड़े घुमा कर फेंकने पर काफी दूर तक पानी की सतह पर तैरते-उछलते चले जाते थे।

मगर जब भी उसने उस छत की तरफ आवाज लगायी, उधर से बिना किसी परिवर्तन के रोने की वही आवाज आती रही।

तभी उसके पिता ने एकाएक कुछ इस तरह आवाज निकाली जैसे सोते में उनकी नाक बजने लगी हो। दरअसल वे हंस रहे थे। दो रोज की भूख और वर्षों से जमी हुई छाती से इससे बेहतर हंसी वे निकाल भी नहीं सकते थे। लेकिन थोड़ी देर बाद ही वे गंभीर हो गये उन्हें लगा जिस चीज पर वे हंस रहे हैं, वह चीज उन्हें जल्दी-से-जल्दी और पूरी गंभीरता के साथ पानी से अधिक-से-अधिक मात्रा में बाहर निकाल लेनी चाहिए।

दरअसल उनके गिरे हुए घर के किसी हिस्से में घड़े के अंदर चने रखे हुए थे, जिन्हें पानी का सैलाब एकाएक आ जाने की वजह से उन्हें वहीं छोड़ आना पड़ा था। गिरी दीवारों के बीच दबा वह घड़ा जरूर उस वक्त फट गया होगा, जब अंदर भरे हुए चने भीग कर फूले होंगे। घड़े के फटने के बाद उसमें से बाहर आये चने के बहुत-से दाने बुलबुले साथ लिए हुए गंदले पानी पर तैर कर बहना शुरू हो गये थे। चंदू के पिता को घड़े के फूटने की इस कल्पना पर थोड़ी हंसी आयी, लेकिन वह जल्दी ही सावधान हो गये और उन्हें लगा कि वह भीगा हुआ चना इकट्ठा भी किया जा सकता है। चंदू की मां ने भी चने के वे दाने देखे—क्यों जी देखो अगर···

उसकी बात पूरी होने से पहले ही चंदू के पिता फूस की उस ढालू छत पर नीचे की ओर किसी अनभ्यस्त चिपांजी की तरह हाथों और पैरों के सहारे सरकने लगे थे। उनके भार के आगे तक पहुंचने पर उस छुद्र का निचला हिस्सा और ज्यादा झुक गया और वह इतने झटके से झुका कि अगर काफी फुर्ती से उसके पिता ने अपने को पीछे न घसीटा होता तो बहुत मुमकिन है वे पानी में गोता ही खा गये होते।

छत झुक जाने से चने के दानों और उसके पिता के बीच फासला और ज्यादा हो गया।

—गमछा-गमछा फेंको। पिता इन लोगों की तरफ देख कर चिल्लाये।

—गमछा! चंदू, उसकी मां और बाकी बच्चे एक-दूसरे का मुंह देखने लगे।

दरअसल यह बिलकुल निरर्थक मांग थी, जिसका अहसास तुरंत चंदू के पिता को भी हो गया, क्योंकि घर से निकल कर फूस पर चढ़ते वक्त गंदला पानी जिस तेजी से चढ़ रहा था, उस वक्त गमछे को साथ लाने की जरूरत ध्यान में रखना ऐसा ही था, जैसे पहाड़ की चोटी से खाई में गिरने वाले आदमी का अपनी टोपी संभालने की चिंता करना।

घड़े में रखे हुए चने भींगने के बाद जरूरत से ज्यादा फूले होंगे और घड़ा फटने से पहले काफी तादाद में लगभग एक दूसरे से चिपक गये होंगे क्योंकि बहती हुई गंदगी और कूड़े के बीच चने के दानों का एक पिंड पानी से बाहर आया और तैरने लगा। चंदू के पिता बेचैन हो उठे। पानी जिस तेजी से बह रहा था, उसे देखते हुए कुछ ही क्षणों में वह पिंड कहीं-का-कहीं पहुंच कर जानेवाला था।

एक बार आस-पास देखा। पता नहीं किसी अनजानी सहायता के लिए या फिर अपनी झेंप को छुपाने के लिए और कमर पर लपेटा हुआ कपड़ा जल्दी-जल्दी खोलने की कोशिश करने लगे।

पुराने और सड़े हुए कपड़े की कुछ अपनी खासियतें होती हैं—उनमें से एक यह भी होती है कि उसमें लगी हुई गांठ का सिरा जल्दी खोजे नहीं मिलता और मिलता है तो गांठ आसानी से खुलती नहीं है। चंदू के पिता ने अपनी कमर में जो कपड़ा बांध रखा था, उसके साथ यही हुआ। उसकी जल्दी-जल्दी गांठ खोलने की कोशिश उन्होंने की और फिर बेतहाशा उत्तेजित होकर उसे योंही किसी सुथने की तरह अपने कूल्हों से नीचे खिसकाया। उनके हमेशा ढके रहने वाले शरीर के उस हिस्से की गवाही गोकि वहां कोई नहीं था और होगा भी तो उससे कोई फर्क पड़ने वाला नहीं था, फिर भी एक अनायास शर्म ने उनके शरीर को सिकोड़ दिया। उन्होंने उस कपड़े का सिरा चने के पिंड़ पर फेंका।

कपड़ा बिलकुल ठीक जगह पड़ा। चने का पिंड कपड़े के कुन्डल के बीचोंबीच आ गया। चंदू ही नहीं, उसकी मां और उसकी छोटी बहनें भी खुशी से चिल्लाने लगीं। भीगे हुए चनों का आधा जायका तो उन्होंने

इतने भर से ही ले लिया कि चने का पिंड पकड़ में आ गया था। चंदू तालियां बजाने लगा।

फिर उन्हें थोड़ी परेशानी होने लगी। कपड़े के उस कुंडल के बीच फंसा वह पिंड उनकी तरफ आने के बजाय थोड़ा-सा आगे ही खिसक रहा था और तभी उनकी वह खुशी एक साथ टूटी। उस मैले कपड़े के इस छोर पर खुरदरे काले शरीर वाले चंदू के पिता का कहीं कोई निशान नहीं था। उस जगह छत पर पानी और ज्यादा चढ़ आया था और गंदले झाग और सड़ी टहनियों के टुकड़ों का एक छोटा चक्का जैसे घूम रहा था।

एकाएक वे लोग कुछ समझ नहीं पाये। फिर उन्हें यकीन हो गया कि चंदू के पिता सहसा पानी में गिर गये थे। बिलकुल सन्नाटे में आये चारों लोग उस जगह घूरने लगे, जहां चंदू के पिता किसी आदिम मानव की तरह भीगे चने के लिए संघर्ष करते खड़े थे। उन्हें विश्वास था कि मुंह में भर गया पानी दोनों फूले गालों की मदद से पिचकारी की तरह छोड़ते हुए चंदू के पिता पानी की सतह से अपना गंजा सिर उछाल कर बाहर आ जायेंगे। लेकिन उसके लिए भी उन्हें लगा कुछ ज्यादा ही देर हो गयी थी।

तब उन्होंने सोचा, शायद वे गलत जगह देखने लगे हैं। चंदू के पिता जरूर किसी दूसरी जगह खड़े रहे होंगे। उन्होंने तेजी से दूसरी संभव जगहों पर नजरें दौड़ायीं। पिता का कहीं नामोनिशान नहीं था। चंदू ने थोड़ा आगे बढ़ कर उन्हें आवाज देनी चाही, तभी एक तीखा चीत्कार उसकी रीढ़ से होकर उतरता चला गया। चंदू की मां की समझ में आ गया कि चंदू के पिता के साथ क्या हुआ है। उसने अपनी दोनों बेटियों को अपने से चिपटा लिया और बेहद जोर-जोर से रोने लगी।

उस मटमैले, मलेरिया के बुखार की तरह जोड़-जोड़ में घुसे भीगे धुंधलके में दूर की दूसरी छत से आने वाली रोने की आवाज थोड़ी देर के लिए थम गयी, लेकिन चंदू की मां की आवाज पहले वाली से कहीं ज्यादा मनहूस और बेचैनी पैदा करने वाली लगने लगी।

चंदू ने दूसरी खामोश हो गयी फूस की छत की तरफ साफ देखा। चंदू और उधर वालों की छतों के बीच आम के एक पेड़ का ऊपरी काला सिरा

किसी दैत्य के आधे डूबे सिर की तरह उभरा हुआ था और उसकी वजह से दूसरी छत पूरी नहीं दिखाई देती थी। पेड़ की आड़ बचाते हुए उस छत पर रोने वाली औरत अब अपने बच्चे के साथ इधर देखने की कोशिश कर रही थी।

उन दोनों का ध्यान एक अजीब-सी आवाज से टूटा। उस अजीब-सी आवाज का उत्स उन्हें नहीं मालूम था। मां रोती रही, लेकिन चंदू और उसकी बहनें आसमान की तरफ देखने लगे। उन्हें दरअसल यह डर लगने लगा कि बारिश होगी। बारिश से उन्हें बहुत ज्यादा डर लगने लगा था। थोड़ी देर में आवाज कुछ इस तरह की हो गयी जैसे बहुत-सी मोटरगाड़ियां कहीं से आ रही हों। लेकिन शोर ध्यान से सुनने पर उससे अलग लगा—बल्कि किसी कदर उस रात की आवाजों की तरह लगा जिस रात यह सब हुआ था।

नींद की आधी बेहोशी में लोगों के विक्षिप्तता भरे चीत्कारों और लगातार हर तरफ से उफनते आते पानी के शोर की खौफनाक याद उसे अब भी थी। उस रात धुंधलके में जल्दी ही उन्हें दूर पर कुछ धब्बे-से तेजी से बड़े होते हुए दीखे।

दरअसल बाढ़ की स्थिति का जायजा लेने के लिए मशीन से चलने वाली छोटी-छोटी नावों का एक झुंड उनकी तरफ बढ़ रहा था। वह शोर उन्हीं नावों का था। उनके पैट्रोल से चलने वाले इंजन बहुत ज्यादा ही शोर कर रहे थे।

उन नावों पर कई-कई लोग बैठे हुए थे, जिनमें कुछ औरतें भी थीं। करीब-करीब सभी ने नारंगी या नीले रंग की गद्देदार कोई चीजें पहन रखी थीं। ये चीजें उन्हें नाव उलट जाने के वक्त डूबने से बचा सकती थीं।

चंदू उत्सुकता से उन नावों को देखने लगा। उसकी मां थोड़ी देर चुप हुई, फिर जोर-जोर से उन्हें देख कर चिल्लाने लगी—उसको बचाओ साहब—ओ साहब···

नावों की मशीनों का शोर बहुत ज्यादा था। उनसे थोड़े-से फासले से नावें आगे बढ़ गयीं। चंदू की मां ने चीख कर फिर वही कहा।

सबसे पिछली नाव पर बैठी एक औरत ने उसकी ओर ऐसे हाथ हिलाया, जैसे खुद ट्रेन के सफर पर जा रही हो और किसीको अलविदा कह रही हो। तभी उनमें से एक नाव थोड़ा अलग हुई, पानी में ठिठकी और एक लंबा दायरा बना कर वापस मुड़ी। मूड़ कर फिर चंदू की फूस वाली छत की तरफ आने लगी।

चंदू की मां एकाएक चुप होकर उसे देखने लगी। चंदू को लगा शायद वे लोग उन्हें नाव पर ही चढ़ा लें। नाव काफी करीब आयी। उसमें बैठे तीन लोगों ने दोबारा उसी तरह उनकी तरफ हथेली हिलायी, फिर उनमें से एक ने झुक कर नाव में रखे थैले में से प्लास्टिक की एक छोटी-सी थैली उठायी। उसमें बेहद स्वादिष्ट भूने गये मक्की के दाने करीने से बंद कर दिये गये थे। मक्की के दानों की वह थैली उसने चंदू और उसके परिवार की तरफ उछाली और देखते-ही-देखते नाव फिर उतनी ही तेजी से चक्कर लगा कर लौट पड़ी।

मक्की के दानों की उस थैली को बच्चे रद्दी ढंग से फाड़ न डालें, इसलिए उसे चंदू की मां ने ले लिया। दांतों की मदद से उसे खोलने भर से आसपास जो खुशबू इतनी लंबी भूख के बाद फैली, उसने चंदू को और उसकी बहनों के लालच को बेहद बढ़ा दिया। मां ने बहुत सावधानी से मक्की के दाने बांटने शुरू किये। दरअसल वह सारे दाने बांटना नहीं चाहती थी। थोड़े-से बचा कर रख लेना चाहती थी।

चंदू और दोनों बच्चियों को दाने बांटने के बाद उसने फिर रोना शुरू कर दिया।

—अम्मा! एक तीखी चीख फिर गूंजी। चंदू की छोटीवाली बहन के दोनों पैर सड़ी हुई फूस की छत में एक-ब-एक धंस गये। मां उसकी ओर झपटी तभी उतना हिस्सा कटा और पानी की धार में गायब हो गया। लड़की दो बार उसी जगह पानी से ऊपर आयी। मां चीख-चीख कर उसे पकड़ने की कोशिश करती रही और तीसरी बार जहां लड़की थी वहां सिर्फ कुछ झाग भर रह गया।

मां छत के ऊपर जिस तरह झुकी थी। उसी तरह झुकी रोने लगी। यह अच्छा हुआ वरना वह यह देख लेती कि पानी में धंसने से पहले बच्ची की मुट्ठी के दाने फूस के ऊपर फैल गये थे और चंदू और उसकी बची हुई बहन उन्हें चुपचाप बीन कर इकट्ठा कर रहे थे।

विस्थापित

□

उसने नीचे झुक कर अपनी पोशाक पर नजर डाली और थूका। संतुष्ट होने पर वह थूकता था। पोशाक कोई खास नहीं थी। दरअस्ल उसने थोड़ी देर पहले अपनी बदरंग पतलून के घुटने पर एक थिगली लगाई थी। उठने के बाद वह इस बात का इत्मीनान कर लेना चाहता था कि वह थिगली जहां की-तहां जमी हुई है। थिगली वहीं थी। ऊंचू तांगेवाले ने उसे बताया था कि ट्रेन आ गयी है। उसने अविश्वास जाहिर किया। ट्रेन का वक्त उसे मालूम था। सभी ट्रेनों का वक्त उसे मालूम था। तांगा आगे बढ़ाते हुए ऊंचू ने ललकार कर दुबारा कहा—सच कौवे, एक ट्रेन आयी है।

कौवा हर ट्रेन के आने और छूटने की खबर रखता था। सिर्फ पांच ट्रेनें आती थीं। उनमें से एक आधी रात की ट्रेन की चिंता वह नहीं करता था। बहुत सुबह से ले कर शाम तक की ट्रेनों से उसका गहरा रिश्ता हो गया था। ट्रेन कहां से आती है और कहां जाती है, इसके बारे में जानने की जरूरत उसने महसूस नहीं की। वैसे उसे नफरत सिर्फ सुबह वाली ट्रेन से होती थी, जो रुकती ज्यादा थी और स्टेशन से रवाना होती थी, तो बेतरह बदबूदार गंदगी छोड़ जाती थी।

ट्रेन सचमुच ही आ गयी थी। स्टेशन पर काफी भाग-दौड़ थी। लेकिन यह ट्रेन जाने क्यों उसे पहली नजर में ही सुबह वाली ट्रेन से भी ज्यादा घटिया लगी। लपक कर प्लेटफार्म पर आ गया। वह अजीब बेहूदा ट्रेन थी! अंदर बेहद भीड़ थी। पहली नजर में ऐसा लग रहा था, जैसे किसी जानवर की लाश में कीड़े पड़ गये हों। ट्रेन के बाहर खाकी वरदी वाले लोग बड़ी तादाद में बेहद चुस्ती के साथ दौड़-धूप कर रहे थे। इन